School of Education

Certificate

I hereby declare that the short synopsis **"Dr. Bhagwan Das ke Shaikshik Darshan evam Bharteeya Shiksha me unke Yogdan ka Adhyayan"** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Education under school of Education of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2021-2022.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof./Dr. P.K. Pandey and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Brij Bala Singh
(Brij Bala Singh)
Enrol. No. 2100903

20/05/25
Prof./Dr. P.K. Pandey
Research Supervisor & Co-Supervisor
Faculty of Education

20-05-2025
P.K. Astalin
(Director of Concerned School of Studies)

20/05/25
(Signature)
(Name)
(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

"Dr. Bhagwan Das ke Shaikshik Darshan evam Bharteeya Shiksha me unke Yogdan ka Adhyayan"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree

of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN EDUCATION

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Brij Bala Singh

Enrol. No. 2100903

Under the Supervision of

Prof. /Dr. P.K. Pandey

Faculty of Education

School of Education

U.P. Rajarshi Tandon Open University Shantipurm, (Sector F)

Phaphamau, Prayagraj 211021

Brij Bala Singh

ABSTRACT

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य अर्थोपार्जन तक सीमित हो कर रह गया है तथा समाज में मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। अतः आज आवश्यकता है भारतीय जनमानस की समझ रखने वाले भारतीय संस्कृति के पोषक एवं राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत महापुरुषों के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन किया जाय तथा तदनुरुप आधुनिक शिक्षा प्रणाली में रचनात्क परिवर्तन की सम्भावनाओं पर विचार किया जाये।

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य है डा0 भगवान दास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, जीवन दर्शन, शैक्षिक दर्शन तथा उनके शैक्षिक एवं सामाजिक योगदान का अध्ययन करना तथा वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में उनके शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध में दार्शनिक शोध विधि का प्रयोग किया जायेगा तथा वर्णनात्मक विधि का भी यथास्थान प्रयोग किया जायेगा। प्रदत्तों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों द्वारा किया जायेगा। सम्बन्धित साहित्यों में उपलब्ध सूचनाओं का संकलन कर आँकड़ों को एकत्रित किया जायोगा तथा साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से भी सूचनाओं को एकत्रित किया जायेगा।

शोधकर्त्री को पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तावित अध्ययन आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्याप्त कमियों को सुधारने का एक महत्वपूर्ण प्रयास होगा।

Keywords:–

शैक्षिक दर्शन , भारतीय शिक्षा , पाठ्यचर्चा , योगदान , अध्ययन।

Brij Bala Singh

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1	Introduction	1-2
2	Literature Review	2-6
3	Description Broad Area	6-8
4	Objectives of the Study	8-9
5	Research Methodology	9-11
6	Expected Outcome of the Research	11-12
	References	
	Plagiarism Report	

Brij Bala Singh

डॉ० भगवान दास के शैक्षिक दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उनके योगदान का अध्ययन

Introduction
प्रस्तावनाः—

दर्शन उस शास्त्र का नाम है जो सत्य एवं ज्ञान की खोज करता है। उपनिषद काल में दर्शन को इसी रूप में स्वीकार किया जाता था। उस समय दर्शन की परिभाषा थी 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' अर्थात जिसके द्वारा देखा जाय अथवा सत्य के दर्शन की दिव्य दृष्टि प्राप्त हो वह दर्शन है। दर्शन में इस ब्रह्मांड और उसमें मानव जीवन की व्याख्या की जाती है तथा मनुष्य जीवन के अन्तिम उद्देश्य और उस उद्देश्य की प्राप्ति के साधन मार्ग पर भी विचार किया जाता है। दार्शनिक मनुष्य के वास्तविक स्वरूप को जानने तथा जीवन के अन्तिम उद्देश्य निर्धारित करने का प्रयत्न करते हैं। मानव जीवन के अन्तिम उद्देश्य की प्राप्ति के साधन मार्ग के प्रशिक्षण के लिये वे शिक्षा को आवश्यक मानते हैं।

किसी समाज की शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से उस समाज के दर्शन पर ही आधारित होती है। दर्शन की तत्व मीमांसा से शिक्षा के उद्देश्य, ज्ञान एवं तर्क मीमांसा से पाठ्यचर्चा एवं शिक्षण विधियाँ तथा मूल्य एवं आचार मीमांसा से शिक्षक–शिक्षार्थी के कर्तव्य और अनुशासन का स्वरूप निर्धारित होता है। बृहदारण्यक उपनिमाद में उल्लिखित श्लोक ' असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।' के माध्यम से असत्य से सत्य की ओर तथा अन्धकार से प्रकाश अर्थात अज्ञान रूपी अन्धकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले चलने की कामना की गई है। जगतगुरू शंकराचार्य के अनुसार 'सा विद्या या विमुक्तये'

Brij Bala Singh

अर्थात शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाये।

स्पष्ट है कि दार्शनिक शिक्षा को मनुष्य जीवन के अन्तिम उद्देश्य की प्राप्ति का साधन मानते हैं। यदि किसी शिक्षा व्यवस्था का आधार कोई दर्शन नहीं है तो उसके उद्देश्य स्पष्ट नहीं होंगे उद्देश्यों की स्पष्टता के अभाव में उसका पाठ्यक्रम भी निश्चित नहीं होगा और उचित शिक्षण विधियों का निर्माण भी नहीं किया जा सकेगा। फिश्टे महोदय के शब्दों में 'दर्शन की सहायता के बिना शिक्षा पूर्णतया स्पष्टता को प्राप्त नहीं कर सकती।' हरबर्ट स्पेंसर ने कहा है 'वास्तविक शिक्षा का विधान सच्चा दार्शनिक ही कर सकता है।'

Literature of Review

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षणः—

शर्मा उमा (1992) ने अपने शोध विषय, 'रविन्द्र नाथ ठाकुर डा० भगवान दास तथा महात्मा गांधी के विचारों में सर्वधर्म समन्वय की अवधारणा एक तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन' में यह निष्कर्ष निकाला है कि यद्यपि कुछ बिन्दुओं में तीनों के दृष्टिकोण में कुछ भिन्नता है परन्तु अधिकांश बिन्दुओं में तीनों सहमति रखते हैं। और धर्म के क्षेत्र में उदारतावादी और समन्वयवादी दृष्टिकोण का परिचय देते हैं।

सिंह शशिकला (2000) ने अपने शोध विषय "महात्मा गांधी की जीवन दर्शन और उनके आर्थिक चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" में यह निष्कर्ष निकाला है कि वर्तमान समय में गांधी जी के आर्थिक विचारों और शैक्षिक विचारों को नए सिरे से क्रियान्वित करने की आवश्यकता है ताकि भारत निरक्षरता के अभिशाप से मुक्त हो सके। और एक आत्मनिर्भर आर्थिक इकाई बन कर विश्व के सामने अपना नया आदर्श उपस्थित कर सके

Brij Bala Singh

इस प्रकार गांधी जी के आर्थिक चिन्तन और शैक्षिक विचारों को सैद्धांतिक नहीं बल्कि व्यावहारिक जामा पहनाने की आवश्यकता है।

मिश्रा प्रतिभा (2001) ने अपने शोध विषय "महात्मा गांधी एवं ज्योतिबा राव फूले के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" में यह निष्कर्ष निकाला कि महात्मा गांधी एवं ज्योतिबाराव फूले द्वारा दी गई शिक्षा निश्चित रूप से समाज के सभी वर्गों के लिए आवश्यक है। महात्मा गांधी लोगों को यह शिक्षा देना चाहते थे की यह समाज तभी सुसंस्कृत हो सकता है जब सभी लोग शिक्षित हों। ज्योतिबा फूले ने समाज सेवा के माध्यम से लोगों में जागरूकता लाई थी। निश्चित रूप से आज भी समाज को ऐसे शिक्षाविदों की आवश्यकता है जिससे हमारा सम्पूर्ण राष्ट्र "वसुधैव कुटुम्बकम्" के सूत्र में पुनः एकबद्ध हो सके।

सिंह राजेश कुमार (2005) ने अपने शोध विषय "गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर एवं पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों एवं योगदान का तुलनात्मक अध्ययन " के अन्तर्गत यह निष्कर्ष निकाला है कि टैगोर जी एवं मालवीय जी के शिक्षा सम्बन्धी विचार कुछेक बिन्दुओं को छोड़कर लगभग समान प्रतीत होते हैं अर्थात् दोनों ने अपनी शिक्षा द्वारा बेरोजगारी को समाप्त कर राष्ट्र की उन्नति एवं विकास की बात कही।

मिश्रा अतुल कुमार (2006) ने अपने शोध विषय "डा० सम्पूर्णानन्द और शिक्षा" में निष्कर्ष निकाला है कि डा० सम्पूर्णानन्द जी शिक्षा मंत्री और राज्यपाल के पदों पर रहते हुये वे न केवल अपने आपको अध्यापक समझते रहे बल्कि अपनी इस मान्यता को प्रत्येक मंच से गर्व के साथ घोषित करते रहें। शिक्षा के उन्नयन में उन्होंने जो अभूतपूर्व कार्य किये, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

Brij Bala Singh

सत्यनाम (2008) ने अपने शोध विषय 'वर्तमान भारतीय शिक्षा में डॉ० जाकिर हुसैन के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता' में डॉ० जाकिर हुसैन के जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, दार्शनिक विचार, शिक्षा दर्शन, शिक्षा सम्बन्धी अन्य कार्यों एवं वर्तमान भारतीय शिक्षा में उनके शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता के विषय में अध्ययन किया है।

ठाकुर अरुण (2011) ने अपने शोध विषय "आधुनिक शिक्षा के विकास में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन का योगदान एक ऐतिहासिक विश्लेषण" में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक की नैतिकता, जिम्मेदारी एवं व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों पर स्वामी जी के चिन्तन के प्रभाव का समन्वय वादी चित्र प्रस्तुत किया है जिसके आधार आत्मनिर्भरता चरित्र और संकल्प शक्ति का विकास सम्भव हो सके।

सोनिया ओम प्रकाश (2011) ने अपने शोध विषय 'डॉ० भगवान दास के सर्वधर्म समन्वय की अवधारणा' में यह निष्कर्ष निकाला है कि डॉ० भगवान दास का 'सर्वधर्म समन्वय' विभिन्न धर्मों की विविधता में एकता तथा विषमताओं में समता का प्रयास है, भारत जैसे विभिन्नता वाले राष्ट्र के लिए, जिसकी बुनियाद ही धर्मों की एकता पर टिकी है, डॉ० भगवान दास का 'सर्व धर्म समन्वय' सिद्धान्त रामबाण औषधि के समान है।

सिंह नीलेश (2012) ने अपने शोध विषय "रविन्द्र नाथ टैगोर" के शैक्षिक योगदान का वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता एक अध्ययन" के अन्तर्गत गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों तथा शिक्षा में योगदान का अध्ययन किया है।

मिश्रा मनोज (2012) ने अपने शोध विषय 'वर्तमान भारतीय शिक्षा' में

Brij Bala Singh

गिजूभाई के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता' में यह निष्कर्ष निकाला है कि गिजूभाई ने यह सिद्ध किया है कि कम से कम खराब से खराब साधनों से भी श्रेष्ठतम शिक्षा सम्भव है। शिक्षक की कर्मठता, कल्पनाशीलता और कला यदि शिक्षण के प्रति समर्पित है तो शिक्षा न केवल अपेक्षित स्तर की होगी बल्कि शिक्षा से जिस नये मनुष्य का निर्माण होगा वह एक सार्थक मनुष्य होगा। इस दृष्टि से गिजूभाई का सम्पूर्ण शैक्षिक साहित्य उनके नवाचार एवं उनके प्रयोग न केवल आज बल्कि आने वाले समय के लिए भी प्रासंगिक है।

सिंह मृदुला (2014) ने अपने शोध विषय "वैदिक कालीन सभ्यता एवं शिक्षा वर्तमान में प्रासंगिकता" में निष्कर्ष निकाला है कि वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था सभी धर्म और दर्शनों का मूल है, उसे यदि सार्वभौमिक और सार्वकालिक शिक्षा दर्शन कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी आज हम जिस वर्गहीन धर्मनिरपेक्ष एवं समाजवादी व्यवस्था की बात करते हैं वह वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था की अभेद दृष्टि द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

शर्मा विद्या (2020) ने अपने शोध विषय 'बालिका शिक्षा एक दार्शनिक परिशीलन' में यह निष्कर्ष निकाला है कि जब तक बालिकायें शिक्षित नहीं होगी उनकी स्थिति में सुधार नहीं होगा, महिलाओं की सभी प्रकार की स्थिति में सुधार तथा प्रजातन्त्र की सफलता हेतु बालिका शिक्षा नितान्त आवश्यक है क्योंकि जब तक महिलाओं को शिक्षित नहीं किया जायेगा तब तक समग्र विकास के उच्च स्तर को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा–

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि अनेक महापुरूषों जैसे महात्मा गांधी, ज्योतिबा राव फूले, रविन्द्र नाथ टैगोर, डॉ०

Brij Bala Singh

सम्पूर्णानन्द, डॉ० जाकिर हुसैन, स्वामी विवेकानन्द, गिजू भाई जैसे शिक्षा शास्त्रियों पर अनेक शोध हुये हैं परन्तु डॉ० भगवान दास पर शोध अत्यल्प है। डॉ० भगवानदास के सर्वधर्म समन्वय की अवधारणा पर शोध हुआ है परन्तु भारतीय शिक्षा में उनके योगदान पर शोध नहीं हुआ है, यदि हुआ भी है तो शोधकर्त्री के संज्ञान में नहीं है।

Discription Broad Area

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः–

आज सम्पूर्ण विश्व में मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। वर्तमान समय में शिक्षा के व्यावसायीकरण के कारण शिक्षा का उद्देश्य अर्थोपार्जन तक सीमित हो कर रह गया है तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली मानव जाति के चरित्र निर्माण में अपने आपको पूर्णतरू असमर्थ पा रही है। प्राचीन काल से ही शिक्षा के विकास में अनेक महापुरुषों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिन्होंने समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था करके समाज के विकास को नयी दिशा दी है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली नैतिकता से परिपूर्ण थी, शिक्षार्थी के लिये शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार की गई थी कि प्रारम्भ से ही उसे चरित्रवान बनने की प्रेरणा मिलती थी। शिक्षक न केवल विद्यार्थी की बौद्धिक प्रगति का मूल्यांकन करता था अपितु उसके नैतिक व चारित्रिक विकास का भी ध्यान रखता था। इस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करके विद्यार्थी चरित्रवान एवं आदर्श नागरिक बनते थे, परन्तु कालान्तर में विभिन्न राजनैतिक व सामाजिक परिस्थितियों के कारण यह परम्परा कायम न रह सकी एवं भारतवर्ष में विदेशी शिक्षा ने अपने पाँव पसार लिये। पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त नवयुवक एक ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे जो शरीर से तो भारतीय थे किन्तु मस्तिष्क से विदेशी

Brij Bala Singh

थे।

यह स्थिति भारतीय समाज के लिये अत्यन्त भयावह थी। भारतीय शिक्षा प्रणाली को भारतीयता से परिपूर्ण बनाने के लिये तत्कालीन महापुरुषों, दार्शनिकों तथा शिक्षाशास्त्रियों ने स्तुत्य प्रयास किया।

गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डा० जाकिर हुसैन, पं० मदन मोहन मालवीय, महर्षि अरविन्द जैसे विचारकों ने भारतीय जनमानस में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए अथक प्रयास किया तथा अपने विचारों को मूर्त रूप देने के लिए शिक्षण संस्थाओं की स्थापना भी की। वर्तमान भारतीय समाज में शिक्षा प्राप्त मानव अपना आर्थिक विकास तो कर रहा है परन्तु आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक मूल्यों की अवहेलना हो रही है। अतरू आज पुनः आवश्यकता है कि भारतीय जनमानस की समझ रखने वाले, भारतीय संस्कृति के पोषक एवं राष्ट्रीयता की भावना से ओतदृप्रोत महापुरुषों के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन किया जाय तथा तदनुरूप भारतीय शिक्षा प्रणाली में रचनात्मक परिवर्तन की सम्भावनाओं पर विचार किया जाये।

समस्या की उत्पत्तिः– शोध कर्त्री की प्रारम्भ से ही दर्शनशास्त्र में अत्यधिक रुचि रही है। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में अध्ययन के दौरान शोधकर्त्री को डा० भगवानदास के जीवन दर्शन तथा शैक्षिक विचारों को जानने समझने का अवसर प्राप्त हुआ। शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में विभिन्न दार्शनिकों, शिक्षा शास्त्रियों पर अध्ययन शोधकर्ताओं का प्रिय विषय रहा है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, रवीन्द्र नाथ टैगोर, पं० मदन मोहन मालवीय, सर्वपल्ली राधा कृमणन, महर्षि अरविन्द जैसे अनेक महापुरुषों पर

Brij Bala Singh

अध्ययन शोधकर्ताओं द्वारा पूर्व में किया जा चुका है। डा० भगवान दास एक ऐसे अप्रतिम विचारक दार्शनिक तथा शिक्षाशास्त्री हैं जिन पर अध्ययन अत्यल्प हैं। अतः शोधार्थिनी द्वारा डा० भगवान दास के शैक्षिक दर्शन का विश्लेषण तथा भारतीय शिक्षा में उनके योगदानों का अध्ययन अत्यन्त ही प्रासंगिक तथा आवश्यक प्रतीत होता है।

समस्या का कथन–

उपरोक्त वर्णित विवेचन के आधार पर शोधकर्त्री द्वारा शोध कार्य हेतु चयनित शोध समस्या के शीर्षक को निम्नवत लिखा जा सकता है–

"डा० भगवान दास के शैक्षिक दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उनके योगदान का अध्ययन।"

Objective of Study

अध्ययन के उद्देश्य–

प्रस्तावित शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. डॉ० भगवान दास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
2. डॉ० भगवान दास के जीवन दर्शन का अध्ययन करना।
3. डॉ० भगवान दास के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।
4. डॉ० भगवान दास के शैक्षिक एवं सामाजिक योगदान का अध्ययन करना।
5. वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में डॉ० भगवान दास के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

Brij Bala Singh

अध्ययन की परिसीमाएँ–

अध्ययन किसी भी समस्या पर आधारित क्यों न हो इसके विभिन्न तत्व होते हैं और समस्त तत्वों का एक साथ अध्ययन करना अत्यन्त कठिन कार्य है तथा कभी–कभी यह शोधार्थी को विषयान्तर भी कर देता है। अतरू शोधार्थी को सफलतापूर्वक शोधकार्य सम्पादित करने हेतु अपनी समस्या को एक सीमा में बाँधना अत्यन्त आवश्यक होता है। इस दृष्टि से प्रस्तावित शोध की निम्न परिसीमांए होंगी–

1. प्रस्तावित अध्ययन उत्तर प्रदेश के विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं के पुस्तकालयों में उपलब्ध ग्रन्थों तक सीमित होगा।
2. प्रस्तावित अध्ययन में वांछित प्राथमिक समंकों को भगवानदास जी के पारिवारिक एवं सन्निकट सदस्यों से साक्षात्कार के माध्यम से एकत्रित किया जायेगा।
3. प्राप्त समंकों के विश्लेषण हेतु विषयवस्तु विश्लेषण तकनीक का उपयोग किया जायेगा।

Research Methodology

अनुसंधान योजनाः–

(i) अनुसंधान विधि–

शैक्षिक शोध की अनेक विधियां प्रचलित हैं जो शोध की प्रकृति पर निर्भर करती हैं–

- दार्शनिक शोध विधि
- ऐतिहासिक शोध विधि

Brij Bala Singh

- वर्णनात्मक शोध विधि
- प्रयोगात्मक शोध विधि

प्रस्तुत शोध दार्शनिक शोध विधि के अंतर्गत आता है इसलिए प्रस्तावित अध्ययन में दार्शनिक शोध विधि का प्रयोग किया जाएगा परन्तु इसका आधार ऐतिहासिक एवं प्रस्तुतीकरण हेतु वर्णनात्मक विधि का भी यथास्थान प्रयोग किया जायेगा। संबंधित पुस्तकों, लेखों, ग्रंथों, भाषणों एवं अन्य उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर विचारों या चिन्तन को एक विशेष परिप्रेक्ष्य में रखना इस अनुसंधान का मुख्य विषय होगा।

(ii) अनुसंधान आंकड़ों का एकत्रीकरण–

दार्शनिक शोध विधि के अन्तर्गत सूचनाओं तथा प्रदत्तों का संकलन प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों द्वारा किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में सम्बन्धित साहित्यों में उपलब्ध सूचनाओं का संकलन कर आंकड़ों को एकत्रित किया जाएगा तथा साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से भी सूचनाओं को एकत्रित किया जाएगा।

(iii) प्राप्त सूचनाओं का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण–

विभिन्न स्रोतों द्वारा प्राप्त सूचनाओं के विश्लेषण के पश्चात प्रस्तुत शोध को छः अध्यायों में बांटा जायेगा जो निम्नलिखित हैं–

प्रथम अध्याय– प्रस्तावना, अध्ययन की आवश्यकता तथा महत्व, समस्या की उत्पत्ति, अध्ययन का उद्देश्य, अध्ययन का परिसीमाएं, सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण, अनुसंधान योजना।

द्वितीय अध्याय– डॉ० भगवान दास का समकालीन, सामाजिक परिदृश्य,

Brij Bala Singh

राजनैतिक परिदृश्य, शैक्षिक परिदृश्य।

तृतीय अध्यायः– डॉ० भगवान दास का जीवन वृत्त, व्यक्तितत्व एवं कृतित्व।

चतुर्थ अध्याय– डॉ० भगवान दास का जीवन दर्शन तथा शैक्षिक दर्शन।

पंचम् अध्याय– डॉ० भगवान दास के शैक्षिक विचारों का मूल्यांकन।

षष्ठम अध्यायः– शोध निष्कर्ष तथा भावी अध्ययन के लिए सुझाव।

Expected Outcome of the Research

प्रस्तावित अध्ययन की सार्थकता–

डॉ० भगवान दास, सच्चे देश भक्त, स्वतंत्रता सेनानी, समाज सेवक, साहित्यकार तथा दार्शनिक होने के साथदृसाथ एक महान शिक्षाशास्त्री भी थे। वाराणसी में सेंट्रल हिन्दू कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और काशी विद्यापीठ की स्थापना में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा काशी विद्यापीठ के वे प्रथम कुलपति भी रहे। सन् 1955 में भारत सरकार की ओर से तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के द्वारा उन्हें सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके जीवन की विलक्षणता उनके द्वारा रचित साहित्य में परिलक्षित होती है। सत्य का अन्वेषण उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। भारत की प्राचीन परम्परा तथा संस्कृति के प्रति डॉ० भगवान दास की गहरी आस्था थी। उनका मानना था कि भारतीय धर्म शास्त्रों, वेदों, पुराणों और उपनिषदों में निहित उपदेशों का आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप विश्लेषण करने की आवश्यकता है। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार "वे प्राचीन ऋषियों व महात्माओं के साँचे में ढाले हुये एक ऐसे महान व्यक्ति थे जो निरन्तर युवा पीढ़ी को दिशा निर्देश देते रहे।" श्री जगजीवन राम के अनुसार "वे एक महान विद्वान और असाधारण क्षमता वाले दार्शनिक थे। उनके व्यक्तित्व में भारत के प्राचीन ऋषि के दर्शन होते हैं।" डॉ० सी.डी. देशमुख के शब्दों में "वे एक सच्चे साधु, विचारक और बौद्धिक थे जिनकी हमारे समाज को बहुत जरूरत है।"

Brij Bala Singh

डॉ० भगवान दास के बारे में विभिन्न महापुरुषों द्वारा व्यक्त विचारों से यह स्पष्ट होता है कि डॉ० भगवान दास का दृष्टिकोण विशुद्ध भारतीय तथा भटकती हुई मानवता को राह दिखाने वाला था। अतरू शोधकर्त्री को पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तावित अध्ययन आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्याप्त कमियों को सुधारने का एक महत्वपूर्ण प्रयास होगा।

Brij Bala Singh

References

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चौबे, सरयू प्रसाद व अखिलेश चौबे, 'आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धांत' इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, 2006

2. गुप्ता, एस० पी० व अलका गुप्ता, 'भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास', इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, 2005

3. पांडेय, राम शकल, 'शिक्षा की दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय पृमठभूमि', आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, 2005

4. पांडेय, के० पी०, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार', वाराणसी : विश्व विद्यालय प्रकाशन, 2005

5. पांडेय, के० पी०, 'शैक्षिक अनुसंधान', वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1988

6. पांडेय, रामशकल, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, 2002

7. शर्मा आर० ए०, शिक्षा अनुसंधान, मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन, 2000

8. लाल, रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन, 2005

9. सिंह, अरुण कुमार, मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली : मोती लाल बनारसी दास, 2014

10. दास, डा० भगवान, सोशल रिकांस्ट्रक्शन, ज्ञान मण्डल, बनारस 1920

Brij Bala Singh

11. दास, डा० भगवान, द साइंस ऑफ पीस, थियोसोफिसकल पब्लिशिंग हाउस, अड्यार, मद्रास, 1903 तथा 1921
12. दास, डा० भगवान, द साइंस ऑफ इमोशन्स, थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, अड्यार, मद्रास, 1900, 1908, 1953
13. दास, डा० भगवान एंशिएण्ट वर्सेस माडर्न साइंटिफिक सोशलिज्म द थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, अड्यार मद्रास 1934
14. दास, डा० भगवान, द साइंस आफ सोशल आर्गनाइजेशन, द थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, मद्रास, 1932, 1935, 1948
15. दास, डा० भगवान, पुरूषार्थ, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी 1966
16. दास, डा० भगवान, विविधार्थ, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी 1965
17. नीलांजना किशोर, डा० भगवान दास (जीवन चरित), नेशनल बुक इण्डिया, दिल्ली, 2022

Brij Bala Singh

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Brij Bala Singh
Title	Dr. Bhagwan Das ke Shaikshik Darshan evam Bhartiya Shiksha me Unke Yogadan ka Adhyayan
Paper/Submission ID	3612198
Submitted by	pkpuprtou@rediffmail.com
Submission Date	2025-05-14 13:40:30
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **3%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Brij Bala Singh